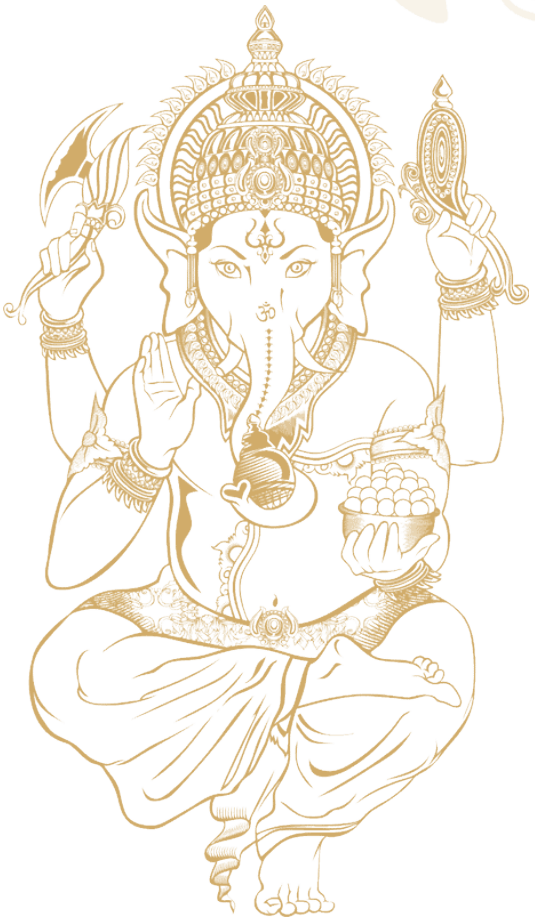

Arushi

28 Jan 2026

04:05 PM

Gurgaon

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121156401**

तिथि 28/01/2026 **समय** 16:05:00 **वार** बुधवार **स्थान** Gurgaon **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:23
अक्षांश 28:27:00 उत्तर **रेखांश** 77:01:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:56 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:13:54 घं
वेलान्तर	00:12:54 घं
सूर्योदय	07:12:04 घं
सूर्यास्त	17:57:59 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	10
नक्षत्र	रोहिणी
योग	ब्रह्म
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वा-वासुदेव
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

चन्द्र 7वर्ष 0मा 1दि

चन्द्र

28/01/2026
29/01/2033

	00/00/0000
	00/00/0000
	28/01/2026
गुरु	01/05/2027
शनि	29/11/2028
बुध	01/05/2030
केतु	30/11/2030
शुक्र	30/07/2032
सूर्य	29/01/2033

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 10मा 25दि

सिद्धा

28/01/2026
24/12/2030

	28/01/2026
संकटा	23/11/2026
मंगला	02/02/2027
पिंगला	24/06/2027
धान्या	23/01/2028
भ्रामरी	02/11/2028
भद्रिका	24/10/2029
उल्का	24/12/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:58:28	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			14:17:18	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि	0.97	मातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			13:59:45	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण	1.17	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	09:43:17	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि	1.00	ज्ञाति	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध		अ	19:00:09	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	सम राशि	0.97	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		23:32:47	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.50	आत्मा	धन	क्षेम
शुक्र		अ	19:29:15	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	मित्र राशि	0.97	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			04:04:25	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.29	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		15:07:59	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		15:07:59	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

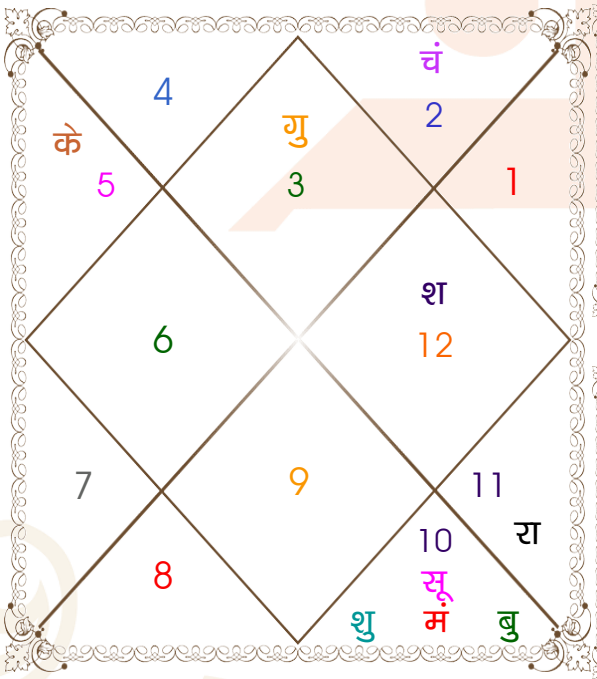

चन्द्र कुंडली

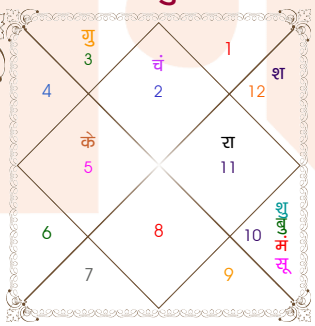

नवमांश कुंडली

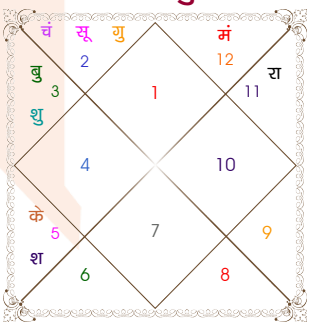

सर्वाष्टकवर्ग

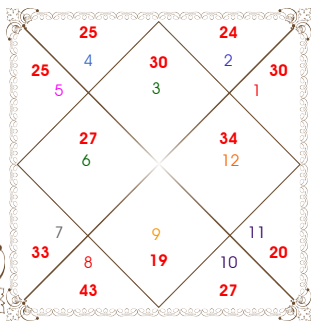

दशमांश कुंडली

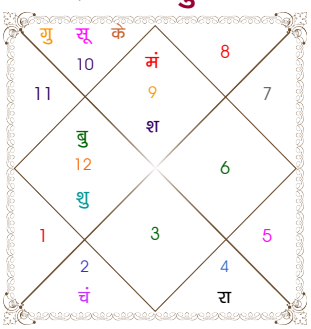

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, मूषक वर्ग सर्प योनि तथा अन्त्य नाडी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म का पहला अक्षर व या ब से प्रारम्भ होगा। यथा बलीराम, बनवारी लाल आदि।

आप ईश्वर में विश्वास रखने वाले व्यक्ति होंगे। समस्त धर्म सम्बन्धी कार्यों के आप ज्ञाता तथा उनको शास्त्रानुसार सम्पन्न करने वाले होंगे। आप दर्शनीप स्वरूप वाले होंगे। आप वाकपटु अर्थात् बोलने में अत्यन्त चतुर होंगे। सार्थक एवं सटीक उत्तर तत्काल देने की आपके अन्दर सामर्थ्य होगी। बुद्धि आपकी अत्यन्त तीव्र होगी तथा कठिन से कठिन विषय को स्पष्ट एवं सुगम रीति से समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आप आजीवन धनवान रहेंगे तथा धन का अभाव आपको प्रतीत नहीं होगा। आप दूसरे के उपकार को हृदय से मानेंगे। अर्थात् कृतज्ञता का भाव आपके अन्दर विद्यमान होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी वाणी सबके मन को अच्छी लगेगी। आप सत्य का हमेशा पालन करेंगे तथा सत्य वाणी ही बोलेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा। आप अहर्निश उत्साह से सम्पन्न रहेंगे तथा प्रत्येक कार्य को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपका व्यवहार तथा आचरण श्रेष्ठ होगा जिसके कारण आप अन्य जनों के प्रशंसा के पात्र बने रहेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

जीवन में आप हमेशा शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धता का ध्यान रखेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप स्थिर बुद्धि के स्वामी होंगे। अतः जो भी कार्य सम्पन्न करेंगे एकाग्रचित होकर सम्पन्न करेंगे। शीघ्रता से कार्य करना आप उचित नहीं समझेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ ही दृष्टिगोचर होगा। दूसरे लोगों के दोष जानने में भी आप अतिच्छुक रहेंगे तथा ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी इच्छा रहेगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

आप वृष राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपके गाल स्थूल तथा वर्ण लालिमा युक्त गौरवर्ण होगा। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का समावेश भी नैसर्गिक रूप से आपके अन्दर रहेगा। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों या विद्वानों के प्रति आप सेवा तथा श्रद्धा का भाव रखने वाले होंगे। गुरू तथा ब्राहमण के आप भक्त होंगे। इनकी आप सब प्रकार से आज्ञा पालन तथा सेवा सत्कार करेंगे। आपका स्वभाव वात तथा कफ मिश्रित रहेगा। बुद्धि आपकी अच्छी रहेगी तथा बाल घुँघराले होंगे। आप जीवन में सुखी रहेंगे तथा दानशीलता की प्रवृति का भी अनुपालन करेंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आजीवन आप विभिन्न प्रकार के सुखों का उपयोग करेंगे। शुद्धता तथा सफाई को आप पसन्द करेंगे। अपने समस्त कार्यों को दक्षतापूर्वक सम्पन्न करने में आप सक्षम होंगे। आप बलवान तथा विलासी प्रवृति के होंगे। आपके पास धनागम प्रचुर मात्रा में होता रहेगा अतः भौतिक सुख साधनों पर आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता भी आपके अन्दर परिलक्षित होगी तथा आपके सभी मित्र गुणवान तथा अच्छे चाल चलन एवं स्वभाव वाले होंगे। साथ ही आपकी मित्रता दीर्घकाल तक स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुख तथा जानु का आकार दीर्घ होगा। आप अपने जीवन के प्रथम दो भागों में कष्ट पाएंगे तथा अन्तिम दो भागों को सुख तथा आनन्द से व्यतीत करेंगे। स्त्री वर्ग से आप कुछ अधिक ही आकर्षित रहेंगे। त्याग तथा क्षमाशीलता का गुण आप में विद्यमान रहेगा। प्रारम्भिकावस्था में आपको कष्ट सहने पडेंगे। तथा परिश्रम भी कुछ अधिक ही करना पडेगा। आपके मुख पीठ तथा बगल में तिल, मस्सा या किसी चोट का निशान हो सकता हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति में आपकी कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। आपका आचरण तथा व्यवहार उत्तम रहेगा। आप धन ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए यश की प्राप्ति करेंगे।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा बाल घने काले तथा घुँघराले होंगे। आपकी प्रवृति काम पीडित होगी। आप न्यायप्रिय होंगे तथा सही गलत को अलग-अलग करने में चतुर होंगे। आपकी चलने की गति दर्शनीय होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ स्थूल तथा सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः

मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आपको धीमी गति से चलना रूचिकर लगेगा। अपने समस्त कार्यों को आप बुद्धिमता पूर्ण ढंग तथा चतुराई पूर्वक सम्पन्न करेंगे। दूसरे के प्रति उपकार की भावना भी आपके अन्दर निहित होगी तथा जीवन में प्रयत्न पूर्वक इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार अपने सत्कार्य तथा पुण्य कार्यों से आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

देखने में आप सुन्दर होंगे। मुखाकृति थोडी दीर्घ होगी तथा सविलासगमनप्रिय प्रकृति के होंगे। आप में कष्ट सहने की पूर्ण शक्ति होगी। आप उच्चाधिकार प्राप्त कोई अधिकारी या पदाधिकारी हो सकते हैं। आपके पेट में जठराग्नि की प्रधानता एवं प्रबलता व्यक्त रहेगी। आप युवावस्था तथा बुढ़ापे में सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले होंगे तथा भगवान शिव तथा विष्णु की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के होंगे। आप देवता तथा ब्राहमणों में पूर्ण श्रद्धा रखेंगे तथा समायानुसार इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आपकी प्रवृति अल्प मात्रा में घंमडी भी होगी। आप एक दयावान पुरूष होंगे तथा अवसरानुकूल दीन दुखियों की सेवा तथा सहायता करेंगे। आप बलवान होंगे साथ ही एक या एक से अधिक कार्यों या कलाओं के जानने वाले होंगे। आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जित करके ज्ञानी कहलाएंगे। शरीर आपका सुन्दर एवं कान्ति से युक्त रहेगा। जो दर्शनीय होगा तथा आप बहुत से लोगों को सुखी रखने वाले होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

धन तथा मान सम्मान से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा इनका आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा। निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे इसमें आपका प्रतिरोधी कोई ही होगा। आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा सम्पूर्ण नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे अर्थात् आप किसी नगर के सम्माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। साथ ही आँखें भी आपकी विशाल होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है। आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध का भाव भी उत्पन्न होगा। साथ ही आप चंचल प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा जिहवा भी आपकी अत्यन्त चंचल एवं स्वाद लोलुप होगी। हर समय विभिन्न स्वादों को लेने का आपका मन करेगा।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा

आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी, तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा ये समय आपके लिए अनिष्ट फलकारी है। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी, तथा अमावस्या तिथियों, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय-विक्रय लेन देन आदि कार्य बिल्कुल भी न करें अन्यथा अशुभ फलों की प्राप्ति होगी तथा हानि के योग बनेंगे। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई महत्वपूर्ण कार्य न करें। इसके अतिरिक्त इसी समय पर शरीर का भी ध्यान रखें।

जब कभी समय आपके प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति हो रही हो, नौकरी या उन्नति में कोई व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, कपूर आदि पदार्थो का दान भी करना चाहिए। इस प्रकार करने से मानसिक व्याकुलता में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे भी अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप भगवान विष्णु तथा शिव की आराधना भी कर सकते हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।